भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान

ICAR–Indian Institute of Farming Systems Research

मोदीपुरम, मेरठ–250 110 (उ०प्र०), Modipuram, Meerut - 250 110 (U.P)

फोन/Phone : 0121-288 8711, 288 8811, फैक्स/Fax : 0121-288 8546

मोबाईल /Mobile : 91-9436731850; ईमेल/Email: directoriifsr@yahoo.com

दिनांक– 12.07.2017

"बागवानी के समेकित विकास हेतु सहभागिता बैठक की कार्रवाही रिपोर्ट"

भाकृअनुप–भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान, मोदीपुरम, मेरठ में दिनांक 11/7/2017 को पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में बागवानी के समेकित विकास हेतु एक सहभागिता बैठक का आयोजन किया गया जिसमें क्षेत्र के अग्रणी कृषकों व बागवानों, विषय विशेषज्ञ वैज्ञानिकों, राज्य सरकारों के बागवानी विभाग के अधिकारियों, पेस्टीसाइड व एग्रो–इनपुट कंपनियों, निर्यातक किसानों, कृषि उपज मंडी के आढ़तियों, किसान नेताओं, गैर सरकारी संस्थाओं, महिला कृषकों, राष्ट्रीयकृत बैंकों, व क्षेत्र के प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया के जाने–माने संवाददाताओं सहित लगभग 322 लोगों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता किसान नेता चौ. नरेश टिकैत द्वारा की गयी। डा. गया प्रसाद कुलपति स.व.भा.प.कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, मेरठ, व डा. एस. राजन निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे। संस्थान के निदेशक डा. आजाद सिंह पँवार ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए पश्चिमी उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड में बागवानी की अपार संभावनाओं के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अपने व्याख्यान में संस्थान द्वारा क्षेत्र में बागवानी की उत्पादकता बढ़ाने हेतु संस्थान के वैज्ञानिकों के माध्यम से बागवानों को उपलब्ध करवाई जा रही तकनीकी सहायता के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस क्षेत्र में आम व सब्जियों के निर्यात की अच्छी संभावनायें हैं जिसका लाभ उठाने हेतु उन्होंने कृषकों को वैज्ञानिकों, एवं निर्यातकों से तालमेल बैठाकर, उन्नत तकनीकों को अपनाने की सलाह दी। निदेशक महोदय ने किसानों व महिला कृषकों की उत्साहवर्धक भागीदारी पर हर्ष व्यक्त किया तथा सभी बागवानों से अपनी बागवानी संबंधित समस्याओं को एक–एक करके तकनीकी सत्र के दौरान उठाने की सलाह दी ताकि विषय विशेषज्ञों के माध्यम से उन समस्याओं का समाधान बताया जा सके तथा एक संबंधित दीर्घकालीय योजना की रूपरेखा बनाई जा सके।

कार्यक्रम के अध्यक्ष चौ. नरेश टिकैत जी ने कृषि व बागवानी को एक अच्छा व्यवसाय बताया तथा किसानों की संपन्नता में कृषि विविधीकरण व पर्यावरण सुधार में बागवानी के महत्व को बताया। उन्होंने

कृषि व बागवानी में पानी के सद्उपयोग करने की सलाह दी तथा गावों में ही बागवानी व कृषि आधारित उद्योगों को स्थापित करने की आवश्यकता जताई जिससे श्रम शक्ति के पलायन को भी रोका जा सके।

डा. गया प्रसाद ने वैज्ञानिकों से किसानों के घर पर जाकर उनकी बागवानी व कृषि संबंधित समस्याओं के निवारण व किसानों की उपज के सही मूल्य निर्धारण व विपणन की व्यवस्था की आवश्यकता जताई।

तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डा. एस. राजन ने की तथा डा. आजाद सिंह पँवार सत्र के उपाध्यक्ष रहे। डा. दुष्यंत मिश्र व वैज्ञानिक फल विज्ञान ने तकनीकी सत्र का संचालन किया। तकनीकी सत्र का शुभारम्भ करते हुए अध्यक्ष डा. एस राजन ने वर्तमान में आम के बागानों में कीट एवं व्याधियों से होने वाले नुकसान की जानकारी दी। उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण कुछ क्षेत्रों में आम की फसल में चुरदा (थ्रिप्स) के बढ़ते प्रकोप व उसके समाधान का उल्ल्लेख किया। कुछ क्षेत्रों में आम के पेड़ की औचक मृत्यु एवं उल्टा सूखा रोगों के बढ़ते प्रकोप व उनके प्रबंधन, फलों के निर्यात योग्य गुणवत्ता पाने हेतु उनकी बैगिंग के सस्ते व सरल तरीकों व उनमें प्रयुक्त होने वाली मशीनरी के बारे में विस्तार से बताया। अध्यक्ष महोदय ने बागवानों से एक–एक करके अपने प्रश्न उठाने व परिचर्चा में भाग लेने की अपील की। सत्र के दौरान बागवानों व किसानों द्वारा अनेकों प्रश्न उठाये गए एवं विशेषज्ञों द्वारा उनकी समस्याओं के समाधान का भी प्रयास किया गया। किसानों द्वारा उठाए गए विभिन्न प्रश्नों व समस्याओं का बिन्दुवार विवरण निम्नवत है।

सारणी– परिचर्चा में उठाये गये प्रश्न एवं उनका समाधान

विषय	प्रश्न/समस्यायें	सुझाव/योजना
(क) **फलोत्पादन संबंधी**	1. आम में एकांतर फलत की समस्या	1. उचित प्रजातियों के चुनाव पर जोर दिया गया 2. उचित पोषण प्रबंधन के साथ पैक्लोव्यूट्राजोल के प्रयोग के सुझाव
	2. आंवले में फल न लगने की समस्या	1. एक ही प्रजाति न लगाकर परागदाता प्रजातियों के साथ रोपण की सलाह दी गयी 2. एक प्रजाति के बगान के पेड़ों पर

		परागदाता प्रजाति की ग्राफ्टिंग पर जोर दिया गया
	3. कम चिलिंग चाहने वाले सेब की जानकारी व पौध की उपलब्धता	1. पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कृषि प्रणाली संस्थान द्वारा सेब की "अन्ना" प्रजाति का मूल्यांकन किया जा रहा है
	4. आम अमरूद व अन्य फलों की गुणवत्ता नर्सरी के स्त्रोत	1. सी.आई.एस.एच. लखनऊ व कृषि प्रणाली संस्थान मोदीपुरम के माध्यम से गुणवत्ता युक्त नर्सरी की खरीद की सलाह दी गयी 2. केवल प्रमाणित नर्सरी से व मात्रि पौधों को देखकर ही पौध खरीदने की सलाह दी गयी
	5. मिश्रित बागवानी की संभावनायें	1. आम, अमरूद, लीची, आंवला व आड़ू इत्यादि को उनकी बढ़वार के अनुसार समायोजित करके रोपण के विषय में बताया गया
(ख) **फसल सुरक्षा**	अ. आमः सूटी मोल्ड, पाउडरी मिल्ड्यू, उल्टा सूखा, आम का औचक मृत्यु रोगों व भुनगा (हापर), थ्रिप्स (चुरदा), तनाबेधक, इल्ली, व चमगादड़ों आदि की समस्याऐं ब. जैविक बागवानी के लिए छिड़काव की जानकारी स. बागों में जैवनाशियों का अंधाधुंध प्रयोग द. लीची में चमगादड़ व	1. आम के लिए एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन विषय में सुझाव दिये गये 2. कीटनाशीयों का छिड़काव पुष्प खिलने से पहले व फल लगने की अवस्था पर ही करने पर जोर दिया गया 3. जैविक बागवानी में जैव फफूँद व कीटनाशियों का प्रयोग 4. चमगादड़ों के लिए सस्ते प्रबंध उपयों पर शोध की आवश्यकता को महसूस किया गया

	फलों के फटने की समस्यायें	
(ग) **कटाई/तुड़ाई उपरांत प्रबंधन व विपणन**	अ. जैविक फलों के बाजार की उपलब्धता ब. निर्यात योग्य आम के उत्पादन	1. किसानों से इंटरनेट के माध्यम से सीधे बाजार से जुडकर पेस्टीसाइड व कार्बाइड रहित आम के उत्पादन पर जोर दिया गया 2. अच्छी गुणवत्तायुक्त फलों के लिए बैगिंग को अपनाने की सलाह
(घ) अन्य	गन्ने में पोखा बोंग रोग एवं मिली–बग व टाप बोरर कीटों की समस्यायें	1. बदलती जलवायु के कारण गन्ने में बीमारियों व कीटों की अधिक प्रकोप की जानकारी व समेकित पोषण व नाशीजीव प्रबंधन की जानकारी दी गई

डा. राजन ने बागवानों की बाग में सर्वे करके आम के औचक मृत्युरोग के प्रबंधन के ऊपर बागों में ही प्रदर्शन लगाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने किसानों से सी.आई.एस.एच., लखनऊ की वेबसाइट पर आम के सीजन में जारी एडवाइजरी के अनुसार बागों के प्रबंधन करने तथा संस्थान के वाट्सएप ग्रुप से जुड़कर सही सूचनायें साझा करने की सलाह दी। साथ ही साथ आम व फलों के बागानों का एक सहकारी समूह (FPO) बनाने का प्रस्ताव रखा जिससे जुड़कर सदस्य बागवान फल के शुरूआती सीजन में देख–रेख व नाशीजीव प्रबंधन के खर्चों हेतु पैसे ले सकेंगे किसानों के अधिक प्रश्नों व समस्याओं को देखते हुए डा. राजन ने ऐसी ही अन्य सहभागिता बैठक कराने की आवश्यकता जताई जिसमें अलग–अलग विषयों के और अधिक विशेषज्ञ सम्मिलित हों ताकि किसानों को और सही जानकारी व लाभ मिल सके। डा. चन्द्रभानु ने किसानों को गन्ने में लगने वाले कीड़ों व रोगों की सही पहचान का प्रदर्शन किया तथा इनके प्रबंधन की जानकारी भी दी।

उत्तराखण्ड प्रदेश के संयुक्त बागवानी निदेशक डा. रतन कुमार ने उद्यान व प्रसंस्करण विभाग द्वारा प्रदेश के बागवानों हेतु फलों सब्जियों, मशाला, पुष्पोत्पादन, मशरूम उत्पादन व मौनपालन पर सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं व किसानों को इन योजनाओं के लाभ उठाने के तरीकों को विस्तार से बताया। मुजफ्फरनगर के जिला उद्यान अधिकारी श्री ए.सी. पाठक ने विभिन्न किसानों की श्रेणियों के लिए बागवानी पर मिलने वाले सरकारी अनुदान के बारे में बताया। उत्तर प्रदेश से क्षेत्र के किसान नेता चौ उद्यम सिंह कृषि प्रणाली संस्थान द्वारा सामान्य किसान व बागवानों को एक मंच पर लाने पर हर्ष व्यक्त किया तथा

लोगों से अधिक आय हेतु बागवानी अपनाने की सलाह दी। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा क्षेत्र में फसलों व बागवानी के ऊपर किये जा रहे कार्यों की सराहना भी की। उत्तराखण्ड से चौ. श्रषिपाल सिंह ने किसानों के अधिक उत्पादित उत्पाद के सही विपणन व मूल्य निर्धारण न होने पर चिंता जताई और वैज्ञानिकों से कृषि व पर्यावरण के प्रति मित्रवत नाशीजीव प्रबंधन पैकेज विकसित करने की सलाह दी। साथ ही साथ उन्होंने उत्तराखण्ड के गावों में कृषि प्रणाली संस्थान, मेरठ द्वारा क्षेत्र में फसलों व कृषि प्रणाली के ऊपर किये जा रहे कार्यों की प्रसंसा भी की। कृषि नजर समाचार पत्र के प्रतिष्ठित संपादक श्री विकाश बालियान ने किसानों से बागवानी अपनाने व सामान्य खेती से ऊपर उठकर फसलों के व्यापार में भी कदम रखने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के 25 प्रगतिशील किसानों व प्रमुख पत्रकारों को संस्थान द्वारा सम्मानित भी किया गया। कार्यक्रम का संचाल डा. पूनम कश्यप ने किया। डा. दुष्यंत मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापन किया। डा. एन रविशंकर कार्यक्रम के समन्वयक रहे। कार्यक्रम भारतीय राष्ट्रगान के उपरांत संपन्न हुआ।

बागवानी के समेकित विकास हेतु सहभागिता बैठक
(पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड)
दिनांक: 11 जुलाई, 2017
11.07.2017 12:08

बागवानी के समेकित विकास हेतु सहभागिता बैठक
(पश्चिमी उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड)
दिनांक: 11 जुलाई, 2017
11.07.2017 14:45